

Dr. Kumari Priyanka

History department

H. D jain college, ara

Notes for ug sem 1

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का संक्षिप्त विवेचना करें।

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन, समृद्ध और सजीव संस्कृतियों में से एक है। इसकी जड़ें वैदिक युग से जुड़ी हैं, जहाँ जीवन का आधार धर्म, कर्म और ज्ञान पर रखा गया। भारतीय संस्कृति केवल परंपराओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन की एक समग्र दृष्टि है, जो मनुष्य, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करती है।

वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद् गीता और पुराणों में वर्णित विचार इस संस्कृति के मूल स्तंभ हैं। इनमें मनुष्य को केवल भौतिक जीवन तक सीमित न रखकर आध्यात्मिक चेतना से जोड़ने का प्रयास किया गया है। गीता में कहा गया – “स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः” – अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन करना ही सर्वोच्च धर्म है। यही भाव भारतीय जीवनदर्शन का केंद्र है।

भारतीय संस्कृति का सार “वसुधैव कुटुम्बकम्” – अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की भावना में निहित है। यह दृष्टि न केवल मानवों के बीच, बल्कि सभी जीवों, वनस्पतियों और प्रकृति के प्रति करुणा, प्रेम और सह-अस्तित्व का संदेश देती है। यही कारण है कि यहाँ नदी, पर्वत, वृक्ष और पशु तक पूजनीय माने गए हैं।

भारतीय परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध, संस्कार प्रणाली, त्योहारों और उत्सवों की परंपरा सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता के प्रतीक हैं। होली, दीपावली, रक्षाबंधन, नवरात्रि जैसे उत्सव न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं। इनसे पारिवारिक बंधन सुदृढ़ होते हैं और समाज में सहयोग, सद्भावना तथा आनंद का वातावरण बनता है।

भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशिष्टता इसकी सहिष्णुता और समन्वय की भावना है। यहाँ अनेक धर्म, भाषा, जाति और परंपराएँ होने के बावजूद समग्रता का भाव विद्यमान है। यह

संस्कृति भिन्नताओं को स्वीकार कर उन्हें एकता के सूत्र में पिरोती है। यही कारण है कि भारत को “एकता में विविधता” का देश कहा जाता है।

भारतीय दर्शन मनुष्य को केवल भौतिक सुख की ओर प्रेरित नहीं करता, बल्कि आत्मज्ञान और मोक्ष की ओर अग्रसर करता है। चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – जीवन के समग्र विकास का मार्ग बताते हैं। यह समन्वित दृष्टि ही भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृतियों से विशिष्ट बनाती है।

कला, संगीत, नृत्य, वास्तुकला, साहित्य और दर्शन भारतीय संस्कृति के जीवंत अंग हैं। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी जैसे नृत्य, ताजमहल और खजुराहो जैसी स्थापत्य कलाएँ, तथा कालिदास और तुलसीदास जैसे महाकवि इसकी सांस्कृतिक गहराई का परिचायक हैं।

अंततः, भारतीय संस्कृति केवल परंपराओं का अनुसरण नहीं, बल्कि **“सत्यमेव जयते”** और **“अहिंसा परमोधर्मः”** जैसे सिद्धांतों पर आधारित जीवन जीने की प्रेरणा है। यह संस्कृति भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक सेतु का कार्य करती है, जो मानवता को शांति, प्रेम, सत्य और सह-अस्तित्व की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।